पु० प्र० 4
प्रतिबन्धित

प्रश्नोत्तरी

सीतापुर

प्रकाशन विभाग
सशस्त्र पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय
सीतापुर

izdk'kd
izdk'ku foHkkx
l'kL= iqfyl izf'k{k.k egkfo|ky;
सीतापुर
दूरभाष : 05862–244231

izFke laLdj.k % 1970
ckjgok¡ laLdj.k % 2006
rjgok¡ laLdj.k % 2011 (10,000 प्रतियाँ)
pkSngok¡ laLdj.k % 2016 (40,980 प्रतियाँ)

ewY; % 50/-(पचास रूपये मात्र)

© leLr vf/kdkj izdk'kdk/khu

इस पुस्तक के प्रकाशन में पूर्ण रूप से सावधानी बरती गयी है और किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए प्रकाशक, लेखक एवं मुद्रक जिम्मेदार नहीं होंगे। विवाद के लिए क्षेत्राधिकार जिला सीतापुर होगा। **izdk'kd**

eqnzd %
श्री आर्ट प्रिन्टर्स
190/1286, पी. एल. शर्मा रोड
मेरठ ।

dEI;wVj dEiksftax
श्री आर्ट प्रिन्टर्स
190/1286, पी. एल. शर्मा रोड
मेरठ ।

---

vkbZ0,l0ch0,u0 u0&978&81&910868&
बिक्री का अधिकार सशस्त्र पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय, सीतापुर
दूरभाष नं. 05862244231

fot; dekj
आई0पी0एस0

सीतापुर

दूरभाष 05862–244231(कार्यालय)
05862–244209(कार्यालय)
अ0शा0प0सः प्रकाशन / मेमो / 16
अपर पुलिस महानिदेशक / प्रधनाचार्य,
सशस्त्र पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय,
सीतापुर– 261 001(उ0प्र0)

दिनांक : फरवरी, 2016

i\Lrkouk

पुलिस का ज्ञान व कौशल उसके प्रशिक्षण की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए उत्तर प्रदेश पुलिस के समस्त सदस्यों को बाह्य विषयों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारियां उपलब्ध कराने के लिए प्रश्नोत्तरी का संशोधित एवं परिष्कृत 14वाँ संस्करण प्रस्तुत है।

इस पुस्तक का प्रथम संस्करण सन् 1970 में प्रकाशित हुआ था लेकिन कुछ वर्षों से पुलिस बल में नये–नयें शस्त्रों के आ जाने से इस पुस्तक को पुनर्संकलित करने की आवश्यकता महसूस हुई जिसके फलस्वरूप प्रस्तुत संस्करण में 9 एम.एम. ग्लॉक पिस्टल MP-5 सब मशीनगन, 12 वोर पम्प एक्शनगन, 51 MM मोर्टर, एक्सप्लोसिव, शस्त्रों के बैरल में आम नुक्स, हथियारों से सम्बन्धित परिभाषायें, पुलिस कवायद एवं शारीरिक शिक्षण जैसे महत्वपूर्ण विषयों का समावेश किया गया है तथा कई अन्य महत्वपूर्ण विषयों में नये प्रश्नों को बढ़ाया गया है।

इस पुस्तक को नई जानकारियों एवं संशोधनों के साथ आप तक पहुँचाने में इस प्रशिक्षण संस्थान के पुलिस उपाधीक्षक / सैन्य सहायक श्री सैय्यद नईमुल हसन, प्रतिसार निरीक्षक श्री निरंजन यादव एवं एस.आई.ए.पी. श्री रामप्यारे हे.का. आई.टी.आई. राजेश कुमार, ने महत्वपूर्ण योगदान किया है जिसके लिए वे प्रशंसा के पात्र है।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक पुलिस बल के सभी स्तर के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। इस पुस्तक को और अधिक ज्ञानवर्धक, रोचक एवं उपयोगी बनाने के लिए आपके सुझाव आमंत्रित है।

भवदीय.

(विजय कुमार)

rjgoa lLdj.k dh iLrkouk

इस पुस्तक का प्रथम संस्करण वर्ष–1970 में प्रकाशित हुआ था, जब श्री किशोरी लाल वत्स, ए0टी0सी0 के प्रभारी सेनानायक हुआ करते थे। इस प्रश्नोत्तरी में पुलिस में प्रयोग होने वाले विभिन्न आग्नेयास्त्रों एवं गोला–बारूद के विषय में प्रश्न और उत्तर के माध्यम से सरल तरीके से जानकारी दी गयी है। इसके साथ ही इसमें फील्ड क्राफ्ट, पुलिस कवायद, मैप रीडिंग, शारीरिक प्रशिक्षण, यातायात, फायर फायटिंग, संचार व्यवस्था, प्राथमिक चिकित्सा तथा खेलकूद आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्नों और उनके उत्तरों को शामिल कर लिया गया है, जिससे यह पुस्तक सभी रैंक के पुलिस प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण के लिये और फील्ड में कार्य करते समय जरूरी जानकारी के लिए बहुत उपयोगी बन पड़ी है। प्रथम संस्करण के बाद, इस पुस्तक की उपयोगिता एवं लोकप्रियता के कारण कई संसकरण छप चुके हैं। इस पुस्तक में समय–समय पर नये विषयों एवं पुलिस में प्रयुक्त होने वाले नये हथियारों के विषय में जानकारी शामिल की जाती रही है।

उक्त पुस्तक की लोकप्रियता एवं मांग के कारण इसका तेरहवां संस्करण प्रस्तुत है, आशा है कि पूर्व की भांति इस पुस्तक का यह संस्करण भी प्रशिक्षणार्थियों एवं प्रशिक्षकों तथा फील्ड में कार्य करने वाले पुलिस अधिकारियों के लिये उपयोगी सिद्ध होगा। इस पुस्तक में यथा समय संशोधन किये जाते रहे हैं। पुस्तक की विषय सामग्री, इसकी शैली आदि के संशोधन अथवा नई सामग्री जोड़े जाने के सम्बन्ध में पाठकों के सुझाव का स्वागत है। सुझाव उपयोगी पाये जाने पर तद्नुसार अगले संस्करण में संशोधन करने अथवा नई सामग्री शामिल करने पर विचार किया जायेगा और सुझाव देने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशंसा पत्र भी प्रदान किया जायेगा।

¼txekgu ;kno½
अपर पुलिस महानिदेशक/प्रधानचार्य
सशस्त्र पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय,
सीतापुर

विषय-सूची

क्रम सं0	विषय	पृष्ठ सं0
1.	.303'' राइफल	1-13
2.	एम0पी0-5/ए-5-(रिट्रैक्टेबल बट स्टाक)	14-16
3.	51 एम0एम0 मोर्टर	17-18
4.	12 बोर पम्प एक्शन गन	19-20
5.	.303 एल0एम0जी0	21-30
6.	.303 ई0 वाई0 जी0 एफ0 राइफल	31-32
7.	7.62 एम.एम. एस0 एल0 आर0	33-37
8.	7.62 एम.एम. एल0 एम0 जी0	38-42
9.	7.62 एम. एम. ए0 के0 एम0 राइफल	43-48
10.	5.56 एम. एम. इन्सास राइफल	49-53
11.	5.56 एम.एम. एल0 एम0 जी0	54-58
12.	.450'' सी0एम0टी	59-61
13.	9 एम.एम. स्टेनगन	62-64
14.	9 एम.एम. कारबाइन	65-70
15.	9 एम.एम. ब्राउनिंग पिस्टल	71-75
16.	9 एम.एम. ग्लाक पिस्टल	76-78
17.	रिवाल्वर	79-84
18.	वी0 एल0 पी0	85-86
19.	पी0 एम0 एफ0 (प्रोजेक्टर मिनी फ्लेयर 13 एम.एम.)	87-88
20.	2'' मार्टर ओ0 एम0 एल0	89-94
21.	एच0 ई0 36 ग्रिनेड	95-100
22.	ट्यूब लांचिग मार्क I/साइट प्रोजेक्टर	101-102
23.	बारूद	103-111
24.	अश्रु गैस	112-121
25.	शस्त्रों के बैरल में आम नुक्स	122-123
26.	हथियारों से सम्बन्धित कुछ परिभाषायें	124-128
27.	पुलिस कवायद	129-146
28.	फील्ड क्राफ्ट एवम् टैक्टिक्स	147-163
29.	फौजी टैक्टिकल शब्दों के अर्थ	164-166
30.	मैप रीडिंग एवम् कम्पास	167-171
31.	शारीरिक शिक्षण	172-178
32.	यातायात	179-181
33.	परिवहन	182-184
34.	फायर फाइटिंग	185-186
35.	संचार व्यवस्था	187-188
36.	प्राथमिक चिकित्सा	189-191
37.	खेल	192-199

.303" राइफल

प्रश्न 1. सिर ऊपर उठाने से गोली कहाँ जायेगी ?

उत्तर – 11 बजे की लाइन में।

प्रश्न 2. ट्रिगर को झटके से दबाने पर गोली कहाँ जायेगी ?

उत्तर – दाहिने 4 बजे की लाइन।

प्रश्न 3. .22" राइफल की सफाई की चिन्दी की नाप बताओ ?

उत्तर – सूखी 4X1½", तेल की 4X1½"

प्रश्न 4. 100 गज से राइफल की एम.पी.आई. कहाँ बनेगी ?

उत्तर – 3 इन्च ऊपर दाहिने।

प्रश्न 5. राइफल नं0 01 की फोर साइट की किस्में बताओ ?

उत्तर – सात प्रकार की होती है।

प्रश्न 6. राइफल नं04 की फोर साइट की किस्में बताओ ?

उत्तर – नौ प्रकार की होती हैं।

प्रश्न 7. राइफल नं01 मार्क III .303" पर थ्री लेटर, ''बी'' किस जगह होता है ?

उत्तर – फोर साइट पर, ब्लेड, वैड और बेस पर होता है।

प्रश्न 8. सी0 क्यू0 बी0 तारगेट की लम्बाई क्या है ?

उत्तर – 4 फीट 3 इन्च।

प्रश्न 9. स्नैप शूटिंग में गोली फायर करने का समय क्या है ?

उत्तर – 3 से 4 सेकेण्ड।

प्रश्न 10. .303 बाल का व्यास क्या है ?

उत्तर – .303 बाल का व्यास .311 इंच तक है।

प्रश्न 11. फायर के दौरान 100 गज से राइफल का जम्प कितना होता है ?

उत्तर – 10 इन्च

प्रश्न 12. फीगर नं0 11 तथा 12 तारगेट की लम्बाई क्या है तथा स्नैप शूटिंग तारगेट का डायमीटर क्या है ?

उत्तर – फीगर नं0 11–3 फीट 9 इन्च, फीगर नं0 12–1 फीट 7 इन्च तथा स्नैप शूटिंग तारगेट का डायमीटर .22 इन्च होता है।

प्रश्न 13. ट्रिगर के एक दबाव में गोली कहाँ जायेगी ?

उत्तर – 4 बजे की लाइन में।

प्रश्न 14. सिर से बट को अलग करने पर गोली कहाँ जायेगी ?

उत्तर – 11 बजे की लाइन में।

प्रश्न 15. स्माल आर्म्स किसे कहते हैं ?

उत्तर – जिनकी बैरल का व्यास 1 इन्च या इससे कम हो। लेकिन 2" मोर्टार भी स्माल आर्म्स में आता है।

प्रश्न 16. कोच की खूबियाँ बताओ ?

उत्तर – 1– शस्त्र के बारे में पूरी जानकारी हो।
2– फायरर के ग्रुप की योग्यता को जानता हो।
3– ग्रुप की गलती को चेक करने की योग्यता हो।
4– अच्छा निशानेबाज हो।
5– फायरर की गलती को दुरस्त कर सके।
6– धैर्यवान एवं नरम दिल वाला हो।

प्रश्न 17. बोल्ट नाव लीवर उठाने पर स्ट्राइकर कितना पीछे आता है ?

उत्तर – 1/8 इंच

प्रश्न 18. फायर से पूर्व किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

उत्तर – हवा, रोशनी तथा जीरोइंग।

प्रश्न 19. राइफल का मजल प्ले कितना है ?

उत्तर – राइफल नं01 मार्क 3 का 10/4 इंच तथा राइफल नं04 मार्क 1 का 1/8 इंच।

प्रश्न 20. स्ट्राइकर कितना ठोकर मारता है या फायर पोजीशन से फायरिंग पिन कितनी बाहर निकलनी चाहिए ?

उत्तर – .04 इंच से लेकर .05 इंच तक।

प्रश्न 21. गोली में कितनी स्टिक बारूद होती है ?

उत्तर – 44 से 49 तक।

प्रश्न 22. ट्रेसर राउण्ड की रोशनी कितनी दूर तक होती है ?

उत्तर – 1000 गज तक।

प्रश्न 23. 4X4 फीट ग्रुपिंग तारगेट पर एमिंग मार्क की क्या नाप है ?

उत्तर – 3X4½ इंच।

प्रश्न 24. 1X1 फीट तारगेट पर एमिंग मार्क की क्या नाप है ?

उत्तर – 1X3/4 इंच।

प्रश्न 25. .22 इंच राइफल का रेन्ज क्या है ?

उत्तर – 25 गज।

प्रश्न 26. बट पर जो झंडा लगाया जाता है उसकी नाप क्या है ?

उत्तर – 6X6 फीट।

प्रश्न 27. .303 बाल का क्या वज़न है ?

उत्तर – 386 ग्रेन (केस 170 ग्रेन, बारूद 36.5 ग्रेन, कैप 5.5 ग्रेन तथा बुलेट 174 ग्रेन)

प्रश्न 28. 100 गज से फायर करने पर ग्रुप की क्या नाप है ?

उत्तर – 3X4½ इंच।

प्रश्न 29. कितने ग्रेन का एक पौंड होता है ?

उत्तर – 7000 ग्रेन का एक पौंड होता है।

प्रश्न 30. राइफल नं04 पर 100 गज से बैनट लगाकर फायर करने पर एम0पी0आई0 कहाँ होगी ?

उत्तर – 4 इंच ऊपर।

प्रश्न 31. राइफल नं01 पर बैनट लगाकर 100 गज से फायर करने पर एम0पी0आई0 कहाँ होगी ?

उत्तर – 4 इंच नीचे।

प्रश्न 32. बोल्ट लॉक कैसे होता है ?

उत्तर – स्टील लग, इन्क्लाइन्ड स्लाट एवम् बोल्ट रिब, रेसिसर्टिंग शोल्डर।

प्रश्न 33. राइफल से एक दबाव से कब-कब फायर करते हैं ?

उत्तर – 1- सी0 क्यू0 बी0 में 2- ग्रिनेड फायर करते समय
3- बालीफायर करते समय

प्रश्न 34. राइफल नाम से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर – राइफल की बोर में जो ग्रूव्ज कटे होते हैं इन्हें राइफिल्ड कहते हैं। इसी आधार पर इसे राइफल कहते हैं।

प्रश्न 35. कैलीवर तथा बोर से क्या समझते हैं ?

उत्तर – दो विपरीत लैण्ड के व्यासीय दूरी को कैलीवर कहते हैं। दो विपरीत ग्रूव्ज के व्यासीय दूरी को बोर कहते हैं।

प्रश्न 36. .303 इंच बोर से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर – किसी एक इंच वर्गाकार ठोस धातु के एक हजार टुकड़ों में से .303 भाग के बराबर इसका कैलीवर है।

प्रश्न 37. मजल एन्ड से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर – बोर का आखिरी भाग जहाँ से गोली बाहर निकलती है।

प्रश्न 38. ब्रीच से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर – चैम्बर का पहला हिस्सा ब्रीच कहलाता है।

प्रश्न 39. चैम्बर की लम्बाई कितनी है ?

उत्तर – 2.158 इंच।

प्रश्न 40. राइफल नं01–मार्क 3 में नं0 कितनी जगह और कहाँ–कहाँ होते हैं ?

उत्तर – सात जगह होते हैं।

1– मैगजीन पर

2– बोल्ट नाव लीवर पर।

3– नेक्श फार्म के दाहिने किनारे पर।

4– लीफ बैंक साइट के नीचे।

5– स्टाक फोर एण्ड पर।

6– नोज कैप के नीचे।

7– बैनट बेस पर

प्रश्न 41. राइफल नं04 मार्क–1 में नम्बर कितनी जगह और कहाँ–कहाँ होते हैं ?

उत्तर – पाँच जगह होते हैं।

1– मैगजीन पर। 2– बोल्ट नाव लीवर पर।

3– साकिट बैन्ड पर।

4– नेक्श फार्म के आगे रीयर हैन्ड गार्ड पर।

5– स्टाक फोर एण्ड पर नोज कैप के नीचे।

प्रश्न 42. राइफल की पहचान के तरीके बताओ या राइफल की पहचान कैसे की जाती है ?

उत्तर – लकड़ी के रंग से, बट नम्बर से, आर्सनल नम्बर से।

प्रश्न 43. राइफल में कितनी साइटें हैं ?

उत्तर – दो हैं। 1– फोरसाइट 2– बैक साइट।

प्रश्न 44. फोरसाइट तथा बैक साइट का काम बताओ ?

उत्तर – फोरसाइट :– फोरसाइट का काम नजदीक एवं छोटे निशान को कवर करना।

बैकसाइट :– बैकसाइट का काम राइफल को सिधाई एवं आवश्यक ऐलिवेशन (ऊँचाई) देना है।

भाग 1
फील्ड क्राफ्ट

परिभाषा व उद्देय

उद्देयः– फील्ड क्राफ्ट के बारे में जानकारी देना है या सिखाना है।

परिभाषाः– युद्ध के मैदान में जमीन के बनावट के अनुसार अपने तथा अपने हथियार को छुपाते हुए टैक्टिकल हरकतों से दुमन के नजदीक से नजदीक पहुँचकर अचानक हमला कर अधिक से अधिक सफलता प्राप्त करने को फील्ड क्राफ्ट या भूमि कौाल कहा जाता है।

फील्ड क्राफ्ट में निम्न पाँच बातों का होना आवयक है–

1. केमोफ्लाज (छद्म)
2. कन्सीलमेन्ट (छुपाव)
3. आबजरवेान (निरीक्षण या देखभाल)
4. कीप साइलेन्ट (खामोाी,)
5. सरप्राइज (एकाएक हमला)

केमोफ्लाज (छद्म)– स्वयं एवं सैनिक महत्ता के स्थानों एवं वस्तुओं को ऐसा बनावटी रूप प्रदान कर देना जिससे दुमन अपनी तेज नजर से भी देख कर न पहचान सके।

आवयकता–

(क) कभी–कभी जमीन ऐसी मिलती है कि बनावटी संसाधनों का प्रयोग किये बगैर दुमन या अपराधी के पास पहुँचना मुकिल हो जाता है उस वक्त कैमोफ्लाज की आवयकता पड़ती है।

(ख) ऐसी जमीन पर पोजीान लेनी पड़ती है जिसमें जमीनी और हवाई आब्जर्वर से न बचे ऐसी जगह पर बनावटी साधनों का प्रयोग कर कैमोफ्लाज करने की आवयकता पड़ती है।

कैमोफ्लाज करते समय ध्यान देने वाली बातें–

1. चमकीली वस्तुओं को मिटा देना चाहिए।
2. स्थानीय वस्तुओं का प्रयोग नही करना चाहिए।
3. नीली वस्तुओं का प्रयोग नही करना चाहिए।
4. खुाबूदार तेल या इत्र का प्रयोग नही करना चाहिए।

5. हरकत न की जाये।

6. मुर्झाने वाली वस्तुओं का प्रयोग नही करना चाहिए।

7. अधिक देर तक न किया जाये।

कन्सीलमेन्ट (छुपाव)– स्वयं की दृष्टि, शस्त्रों के प्रयोग का क्षेत्र, यूनिट की गतिविधियों में बिना किसी रूकावट पड़े भूमि की प्राकृतिक एवं बनावटी आकृति के पीछे छिप कर दुमन की दृष्टि एवं फायर से बचने की कला को कन्सीलमेन्ट कहते है।

आवयकता– अपनी जान बचा कर दुमन के नजदीक पहुंचकर उसको पकड़ने या बरबाद करने के लिए जरूरी है कि उसकी नजर एवं गोली से छुपाव व बचा जाये।

कन्सीलमेन्ट के लिए ध्यान देने वाली बातें–

1. छुपाव के लिए बनावटी कुदरती आड़ में दुमन के सामने अपने को छिपाना हीं छुपाव हैं।

   क. जमीन की बनावट के अनुसार।

   ख. हथियारों का कैमोफ्लाज ताकि दुमन को शोला व धुंआ दिखाई न दे।

आब्जरवेान– किसी स्थान या दुमन को बगैर देख कर अंदरूनी हालातों को भाप लेना ही आब्जरवेान कहलाता है।

कीप साइलेन्ट– दुमन के सामने उसके करीब होते हुये खामोशी अख्तियार कर लेना या जान रहते हुये भी अपने को बेजान साबित करना।

सरप्राइज (अचानक हमला)– ऐसा हमला जिसकी कि दुमन को उम्मीद न हो या उसकी बनाई हुई तरतीब या स्कीम को बिगाड़ कर कामयाबी हासिल करना हीं सरप्राइज कहलाता है।

कैमोफ्लाज एवं कन्सीलमेन्ट में अन्तर :–

केमोफ्लाज	कैन्सीलमेंट
1 कैमोफ्लाज कहीं भी किया जा सकता है।	1. कन्सीलमेन्ट किसी मजबूत आड़ के पीछे किया जाता हैं।
2. इसमें केवल नजर से पनाह मिलती है।	2. इसमें गोली एवं नजर दोनो से पनाह मिलती है।
3. इसमें हरकत नही किया जा	3. इसमें हरकत किया जा सकता है।

सकता है।

4. अधिक देर तक नही किया जा सकता है।

4. अधिक देर तक किया जा सकता है।

5. कैमोफ्लाज में नजरों के सामने रहते है।

5. कन्सीलमेन्ट में आड़ के पीछे रहते है।

❑❑❑

चीजें क्यों नजर आती हैं ?

1. उद्देय – चीजों को नजर आने और उनके छिपाने के सिद्धान्त बताना है।
2. परिचय– देखभाल का मतलब यह है कि दुमन के छिपाव के बावजूद भी उसको देख सकना और छुपाव हासिल करने का मतलब है कि दुमन की देखभाल से बचना। अच्छे देखभाव व छुपाव लड़ाई में जरूरी है क्योंकि–
   (क) एक जवान जिसमें दोनो चीजों में शिक्षा पायी हो वह शत्रु को देखकर और अपने को उससे छिपाकर उसको (दुमन को) मार सकता है।
   (ख) दुमन की देखभाल करके खबरें हासिल की जा सकती हैं, जो कि बड़े कमाण्डरों को अपनी योजना बनाने में सहायता देती है।
   (ग) डिफेन्स की हालत में अच्छे छुपाव से हम दुमन को धोखा दे सकते हैं और उसे विस्मय में डाल सकते हैं।
3. अच्छी देखभाल करने और अच्छे छुपाव हासिल करने के लिए यह बहुत जरूरी है कि हमको मालूम हो कि चीजें अर्थात् आदमी हथियार और गाड़िया इत्यादि नजर आने और उनके छिपाने के लिए क्या सिद्धान्त हैं। इसमें उन सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है।
   (क) छाया (Shadow)– किसी भी चीज की छया देखकर उस चीज को पहचानना उस समय और भी आसान हो जाता है जबकि छाया हमवार सतह के ऊपर पड़ रही हो। देखभाल करते समय शत्रु के चीजों की छाया देखकर उसको पहचानने की कोशिा करनी चाहिए और छुपाव हासिल करते समय यकीन करना चाहिए कि आप की छाया दुमन को नजर न आयें और यदि अगर यह मुमकिन न हो तो आपकी छाया किसी टूटी–फूटी जमीन के ऊपर पड़े।
   (ख) चमक (Shine)– चमकती हुयी चीज दूर से नजर आ जाती है। देखभाल करते समय शत्रु की चमकती हुई चीजों को देखने का प्रयत्न करों, और छुपाव प्राप्त करते समय चमकती हुई चीजों की चमक को बर्बाद कर दो।
   (ग) सतह (Surface)– किसी भी चीज की सतह की बनावट और रंग यदि आस–पास की चीजों की सतह से न मिलती हो तो वह चीज

आसानी से नजर आ जाती है। देखभाल करते समय चीजों की सतह की बनावट और रंग का फर्क देखकर उनको पहचानने की कोशिश करनी चाहिए और छुपाव प्राप्त करते समय चीजो की सतह की बनावट और रंग को आस पास की चीजों की सतह से मिलाना चाहिए।

(घ) खाका (Shilhoutte)– चीजें दूर से भी उसके खाके से पहचानी जाती है। उदाहरणार्थ यदि हम काफी दूर से किसी व्यक्ति को देखें तो हम पहचान लेगे क्योंकि हर व्यक्ति के खाकें से वाकिफ हैं। इसलिए हम मालूम कर लेते है कि यह कोई व्यक्ति है। जबकि बैकग्राउण्ड (Back Ground) किसी चीज के रंग के विरूद्ध हो तो उस चीज का खाका साफ नजर आयेगा। यदि बैकग्राउण्ड हमवार, पानी या स्काई लाइन हो तो भी खाका साफ दिखाई देता है। इसलिए छुपाव हासिल करने के लिए बैकग्राउण्ड का रंग चीज के विरूद्ध नहीं होना चाहिए, और न ही स्काई लाइन या पानी होना चाहिए।

(ड.) शक्ल (Shape)– चीजों की शक्ल जिन्हें हम प्रतिदिन देखने के अभ्यस्त हो जाते है, विशेषकर जबकि वह आसपास की चीजों की शक्ल से अलग हो दूर से नजर आ जाती है। देखभाल करते समय चीजों की शक्ल देखकर उनको पहचानना चाहिए। छुपाव प्राप्त करते समय चीजों की शक्ल को बिगाड़ देना चाहिए।

(च) फासला (Spacing)– कुदरती चीजो का दरम्यानी फासला एक जैसा नही होता हैं। इसलिए यदि कुछ चीजों का दरम्यानी फासला एक जैसा हो तो दूर से नजर आ जाती है। देखभाल करते समय जिन चीजों का दरम्यानी फासला एक जैसा हो उनको ध्यान से देखो और छुपाव प्राप्त करते समय चीजो का दरम्यानी फासला एक जैसा नहीं रखना चाहिए।

(छ) हरकत (Movement)– जब भी कोई हरकत अचानक होती है तो वह आमतौर पर ऑखों को तत्काल दृष्टिगोचर हो जाती है। देखभाल करते समय हरकत (Movement) का ध्यान रखें और छुपाव हसिल करते समय अचानक हरकत न करो।

निष्कर्ष– युद्ध भूमि में अच्छी देखभाल और अच्छो छुपाव बहुत आवयक है देखभाल करते समय और छुपाव प्राप्त करते समय छाया, चमक, सतह खाका,

शक्ल, फासला और हरकत के सिद्धान्तो का ध्यान रहें। इनको याद रखने के लिए 6 सिस्टर (6 Sister), 1 मदर (1 Mother) या 6 एस और 1 एम याद रखा जाये।

S-Shadow	(छाया)
S-Shine	(चमक)
S-Surface	(सतह)
S-Shilhoutte	(खाका)
S-Shape	(शक्ल)
S-Spacing	(फासला)
M-Movement	(हरकत)

❑❑❑

फासले का अनुमान लगाना

फासले का अनुमान लगाने के चार तरीके हैं– इकाई के तरीका, दिखायी का तरीका, ब्रैकेटिंग का तरीका, की रेन्ज का तरीका, सेक्शन औसत का तरीका। इनका विवरण निम्न प्रकार है।

इकाई का तरीका

1. उद्देय– इस लेक्चर और डिमान्स्ट्रेशन का उद्देय इकाई के तरीके से सही फासले का अनुमान की सिखलाई देना है।

2. पहुँच– फासलों का सही अनुमान लगाकर किसी हथियार से दुरूस्त फायर डाला जा सकता है। इससे एम्युनिशन की बचत व सरप्राइज हासिल होता है। वैसे तो आम तौर से इन्फैन्ट्री के जवान 300गज से ऊपर फायर नही खोलते हैं, लेकिन फिर भी जवानों को इस योग्य होना चाहिए कि 1000गज तक के फासले का अनुमान लगा सकें। फासले का सही अन्दाजा लगाकर वह निम्नलिखित सहूलियतें हासिल कर सकते है–

(क) शत्रु पर फायर कब खोलना चाहिए।

(ख) अपने मदद के हथियारों से टारगेट बनाने में मदद।

(ग) ओ0पी0 का काम करते समय पीछे सही खबरें भेजी जा सकेंगी।

इकाई के तरीके के अतिरिक्त और भी चन्द तरीकें है, जिनसें फासले का सही अनुमान लगाया जा सकता है। यह बाद के सबकों में बताया जायेगा। फासले का सही अनुमान लगाना जमीन व मौसम के असर के कारण कभी–कभी कठिन हो जाता है। इसमे मार्ग दर्शक सिद्धान्त निम्न है।

3. (क) फासला असल से कम दिखाई देता है।

(i) रोशनी तेज हो या सूरज देखभाल करने वाले के पीछे हो।

(ii) निशान आसपास के निशानों से बड़ा हो।

(iii) देखभाल करने वाले और निशान के बीच जमीन दबी हुई हो।

(iv) ऊपर या चढ़ाई की तरफ देख रहे हो।

(v) निशान का रंग आसपास से भिन्न हो।

(vi) निाान तथा देखने वालों के बीच जमीन हमवार हो।

(ख) फासला असल से ज्यादा दिखाई देगा–

(i) रोानी कम हो या सूरज देखभाल करने वाले के सामने हो।

(ii) निाान आसपास के निाानों से छोटा हो।

(iii) किसी घाटी, गली या जंगल में से कटे हुए रास्ते से देखना हो।

(iv) देखभाल करने वाला लाईन पोजिान में हो।

4. तरीका– इस तरीके के लिए नाप की इकाई 100गज मानी गयी हैं। इन्ही कारणों से नपे हुए टुकड़ों की भिन्न–भिन्न पोजीानों और जमीन की बनावट के हिसाब से भिन्न–भिन्न जगहों पर समझ लेना आवयक है, ताकि समय पड़नें पर सही अन्दाजा लगा सके।

(क) चारों तरफ की झण्डियों को दिखाने के बाद उनसे दो तीन निाानों से 100गज की दूरी पर खड़े होने का अभ्यास किया जाय।

(ख) 400गज के झण्डे या निाान का अभ्यास दो रिहर्सल किये हुए जवान पहले से छुपी हुई पोजीान में होगें। क्षिार्थियों से पहले फासले का अनुमान लगाने को कहो और पूछो की उन्हें 100गज, 100गज के टुकड़े कहाँ बनाये है। बाद में जवानों को खड़ा करों और उनकी गलती दुरुस्त करों।

(ग) अब 700गज, या 800गज पर ऐसा कोई निाान हो जिसमें बीच में दबी हुई जमीन हो और जिसमें 100,100गज के टुकडे बनाने मुकिल हा क्षिार्थियों को फासले का अनुमान लगाने को कहो, जब वह अनुमान लगाने में मुकिल समझ रहें हो तो बताओं की यह तरीका केवल 400गज के फासले तक खुली हुई जमीन पर अनुमान लगाने के लिए अच्छा है।

5. निष्कर्ष–

(क) फासलो पर असर डालने वाली बातों पर प्रनोत्तर।

(ख) इकाई के तरीके से कितनी दूर तक के फासले का अनुमान लगा सकते है।

दिखाई का तरीका

1. उद्देय– दिखाई से ब्रेकेटिंग और की रेन्ज के तरीको से सही फासले का अनुमान की सिखलाई देना है।
2. पहुँच– अलग–अलग फासलों पर कद और शक्ल को देखकर फासले का अनुमान लगाने का तरीका सबसे अच्छा है, क्योंकि लड़ाई के मैदान में शत्रु के जवानों और उसकी गाड़ियों के विरुद्ध कार्यवाही करनी पड़ती है। इस तरीके से 600गज तक के फासले का अनुमान सही लग जाता है। यदि इससें अधिक फासले का अनुमान लगाना पड़े तो ब्रेकटिंग और की रेन्ज के तरीके प्रयोग में लाये जायें।
3. नमूना– 200गज से 600गज तक के जवान, जो की रेन्ज के पीछें छिपे हुए हों, उनको पहले लेटकर, घुटने के मोर्चे से और फिर पोजीान में दिखलाया जाये। अब बताया जाए कि भिन्न–भिन्न फासलो पर जवान कैसे नजर आतें है।

   (क) 200गज पर जवान का चेहरा व बदन के हिस्से साफ दिखाई देते हैं, और जवान आसानी से पहचाना जा सकता है।

   (ख) 300गज पर जवान का चेहरा धुँधला दिखाई देता है लेकिन बदन के हिस्से साफ दिखाई देते है।

   (ग) 400 गज से चेहरा पहचानना मुकिल हो जाता है लेकिन बदन की रूपरेखा दिखाई पड़ती है।

   (घ) 500 गज पर जवान का शरीर कन्धों से नीचे पतला दिखाई पड़ता है, हाथ पॉव की हरकत दिखाई पड़ती है।

   (ड.) 600 गज जवान का सिर बिन्दु की तरफ दिखाई पड़ता है। छोटे अंग बिल्कुल प्रकट नही होते है, और शरीर के नीचे का भाग पतला मालूम होता है।

तमाम जवानों को एक साथ इारे पर लिटाकर घुटने के बल और खड़े होने की पोजीान में इसके बाद सबसे एक साथ हरकत करायी जाये तत्पचात सब अपनी–अपनी पोजीान में चले जाये।

(च) फासले के अनुमान लगाने में रायफल की फोर साइट ब्लेड भी बहुत मदद देती है। 250 गज पर फोर साइट ब्लेड घुटने के मोर्चे के

जवान को और 400 गज पर खड़े मोर्चे के जवान को पूरा ढक लेता है। पहले लेटने के मोर्चे की पोजीान लिये हुए जवानों को तमाम जवानों से रायफल द्वारा तसल्ली कराई जाये।

4. **अभ्यास– अभ्यास करने के लिए एक जवान 300 गज पर खड़ा मोर्चा, दूसरा 300 गज पर घुटने का मोर्चा, और तीसरा 250 गज पर लेटने** की पोजीान में हो।

ब्रेकेटिंग का तरीका

1- पहुँच– दो दिल की मदद से 600 गज से लम्बे रेंन्ज के फासले का अनुमान लगाने में ब्रेकटिंग के तरीके का प्रयोग किया जाता है। यह तरीका लम्बे रेन्ज के फासलों का अनुमान लगाने के लिए बहुत लाभदायक है।

2- देखभाल करने वाला एक निाान का ज्यादा से ज्यादा और कम से

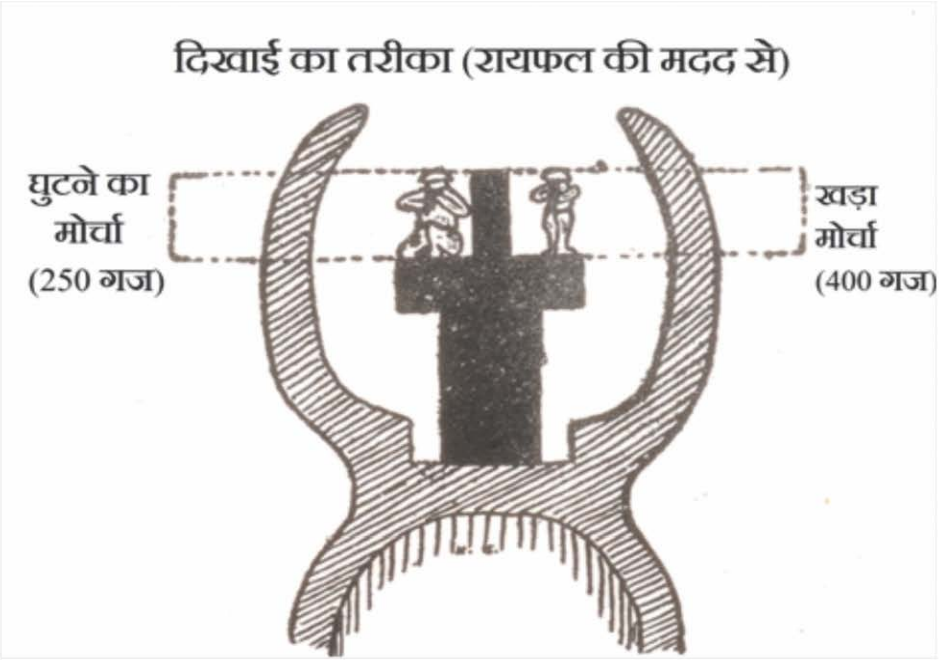

ऐसे तरीके को काम में लाते समय यह बात याद रखें कि वे ब्रेकेट का जितना ही अधिक फर्क उतना ही अच्छा किसी भी हालत में यह 300 गज से कम नही होना चाहिए अभ्यास बराबर समझाया जाये।

कीरेन्ज का तरीका

लम्बे फासलें का अनुमान लगाने का दूसरा तरीका रेन्ज की मदद है। जब किसी निाान या फासलें को बड़े पैमाने वाले नक्शे या रेन्ज फाइण्डर के जरिये पहले से मालूम कर लिया गया हो और दूसरे निाानों का फासला उस निाान की मदद से मालूम किया जा सकता है।

अभ्यास– तीन निाान देकर अभ्यास कराओं।

सेक्न औसत का तरीका

हालॉकि यह तरीका आजकल प्रयोग नही किया जाता है, परन्तु यह तरीका आमतौर पर डिफेन्स में रेन्ज कार्ड बनाते समय दूर के फासलों का अनुमान लगानें के लिए प्रयोग किया जाता है, इसमें समय अधिक लगता है।

तरीका– सेक्न के जवान किसी निाान के फासले का अपना व्यक्तिगत अनुमान बतायें जो अनुमान बहुत गलत हो उसे काट दिया जाय तो फिर सबका योग करके औसत निकाला जाये।

टेस्ट लेने की शर्ते–

(i) रिकूट और सिखलाई पाये हुए जवानों को 600 गज तक की दूरी का अनुमान लगाने की सिखलाई और अभ्यास देना चाहिए।

(ii) अधिकारियों तथा उप अधिकारियों को और चुने हुए जवानों को 1000 गज तक के फासलों का अनुमान करना सिखलाना चाहिए।

(iii) रिकूटों का प्राक्षिण केन्द्र छोड़ने से पहले कम से कम दो बार टेस्ट होना चाहिए।

(iv) एक समय में एक प्लाटून से ज्यादा का अभ्यास कराना असम्भव है। यदि ऐसा किया जाय तो इसका परिणाम यह होगा कि जवान सर्विस पोजीान से भली प्रकार टेस्ट नहीं दे सकेंगे और अभ्यास का बहुत सा समय नष्ट हो जायेगा।

(v) अधिकारियों, उप अधिकारियों तथा सिखलाएं हुए जवानों का जब कभी हालात इजाजत दे एक साल में कम से कम 4 बार टेस्ट लेना चाहिए।

(vi) भूमि– हर टेस्ट के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार की भूमि चुनना चाहिए।

दूरी का अनुमान लगाने का अभ्यास हर समय पहाड़ी की चोटी से ही नहीं करना चाहिए बल्कि हर प्रकार की भूमि और मैदान में भी टेस्ट लेना चाहिए।

(vii) जवानों के पास जो हथियार हो फासले के अनुमान लगाने में उनका भी प्रयोग करने दिया जाये। लेकिन नक्शे पर रेन्ज की मदद लेने की आज्ञा न दी जायें।

(viii) जवानों की छोटी पार्टियों और गाड़ियों को कुदरती फायर पोजीशन से लगाकर फासले के अनुमान लगाने का अभ्यास देना चाहिए।

(ix) अनुमान लगाया हुआ फासला 50 गज से विभाज्य होना चाहिए। जवान अनुमान लगाये हुए फासलों को रायफल की साइट पर लगायें। जिन जवानों के पास रायफल नही है, वे फासले को कागज पर लिखें।

(x) जो भी अभ्यास कराया जाये वह सर्विस पोजीशन से हो अर्थात् आड़ के पीछे देखभाल की पोजिशन में हो। टेस्ट में शिक्षार्थियों को चार अवसर दिये जाये, जिनमें 03 ठीक होने चाहिए।

(xi) हर निशान का अनुमान लगाने के लिए आधा मिनट का समय दिया जाय। यह समय उस समय शुरू होगा जबकि सब जवान निशान को अच्छी तरह समझ चुकें हों, साइट लगाना या लिखना इसी समय में शामिल होगा।

(xii) भूल जो माफ की जा सकती है– अनुमान लगाया हुआ फासला जिसमें माफ की जाने योग्य भूल हो, उसको सही माना जाये। माफ की जाने योग्य भूल इस प्रकार हैं।

300गज के फासले तक 50गज कम या ज्यादा।

300गज से 700गज तक–100गज कम या ज्यादा।

750गज से 1000गज तक 150गज कम या ज्यादा।

निष्कर्ष– फासले का सही अनुमान लगाने से फायर का अवसर मिलने पर परिणाम भी अच्छा मिलेगा।

❑❑❑

जमीन का अध्ययन

1. उद्देय– ग्राउण्ड को टेक्निकल ढंग से पढ़ने व समझने के विषय में समझाना है।
2. पहुँच– जिस प्रकार किसान अपनी भूमि का अध्ययन करता है कि किस प्रकार और क्या उपज हो सकती है, शिकारी जमीन और जंगल को देखकर यह अन्दाज कर लेता है कि अमुक जमीन या जंगल में किस समय शिकार मिल सकता है। इसी प्रकार लड़ाई में जवान व कमाण्डर मिले हुए अपने लक्ष्य (Task) को पूरा करने के लिए जंगी चालों और समय व दाओं को ध्यान में रखते हुए ग्राउण्ड का अध्ययन करता है। इसी को भूमि का अध्ययन (Study of the Ground) कहते है।
3. (क) लड़ाई में– भिन्न-भिन्न लड़ाई के लिए जमीन तथा भिन्न-भिन्न बातों का ध्यान रखते हुए लड़ाई लड़ी जाती है। हर कमाण्डर को मिले इलाकों में दिये हुए टास्क को पूरा करने के लिए ऐसी जमीन की आवयकता है, जहाँ से पूरे इलाके में नजर डाली जा सके। इस वास्ते हर कमाण्डर को चाहिए कि अपने क्षेत्र में अपनी पोजीान चुने।

   (ख) हर एक कमाण्डर को इन बातों को ध्यान में रखना चाहिए–

   (i) शत्रु के आने का रास्ता कौन सा हो सकता है।

   (ii) शत्रु हमारी पोजिान तक आने और देखभाल करने तथा नुकसान पहुँचाने के लिए किन-किन उपायों का प्रयोग कर सकता है।

   (ग) शत्रु की हवाई और जमीनी देखभाल से बचने के लिए आड़ की आवयकता होती है, ताकि शत्रु को हमारी कार्यवाही, पोजीान तथा बनावट का पता न लग सके। इससे बचने के लिए मजबूत आड़ की आवयकता है, आड़ कुदरती या बनावटी कैसी भी हो परन्तु छद्म (कैमोफ्लाज) तथा छुपाव (कन्सीलमेन्ट) पूर्ण रूप से से किया जाना चाहिए।
4. जमीन को ध्यानपूर्वक देखते समय ध्यान में रखने वाली बातें–

   (क) हवाई एवं जमीनी शत्रु से छुपाव।

(ख) स्माल आर्म्स तथा एच0टी0 (हाई ट्रेजेक्ट्री) की मार से बचाव व छुपाव।

(ग) अपनी पोजीान से हर एक मोर्चे तक पहुँचने के लिए बचाव तथा छुपाव हो।

(घ) गोली तथा बमों से बचनें के लिए जमीन ठीक हो।

5. देखभाल– कमाण्डर को हर एक दाा में धैर्य रखना चाहिए। यह तभी हो सकता है जबकि देखभाल का अच्छा प्रबन्ध हो।

(क) हथियारों के रेंज को ध्यान में रखते हुए फील्ड आफ फायर साफ हो।

(ख) हथियार लगाने से पहले ग्राउण्ड की अच्छी तरह से देखभाल कर लेनी चाहिए कि किन-किन जगहों से हमारी सुरक्षा और किस जगह से हमारा हथियार कारगर हो सकतें हैं।

6. रूकावटें–

(क) सामने के इलाके में कुदरती तथा बनावटी कौन-कौन सी रूकावटें हैं ?

(ख) यह बड़े कमाण्डर से मालूम किया जाय कि उनके कवर (Cover) का प्रबन्ध क्या है ?

7. मौसमी खतरा–

(क) पोजीान ऐसी जगह बनायी जाय कि यहाँ पानी का असर न हो और न पानी जमा ही हो सकें।

(ख) खुक में सूखी घास या पत्ती न हो जिसमें आग लगने का खतरा हो।

8. निष्कर्ष– आमतौर पर जमीन का अध्ययन करते समय देखना चाहिए कि जमीन किस प्रकार की है। क्या-क्या रूवावटें है। सामने के इलाके में शत्रु की जमीनी और हवाई देखभाल और फायर से बच सकते है। लड़ाई में हम जमीन को अपनी इच्छानुसार प्रयोग कर सकते है।

❑❑❑

छुपाव और छद्म

1. उद्देय– छुपाव (कन्सीलमेन्ट) तथा छद्म के बारे में सिखलाई देना है।
2. पहुँच– जितना जरूरी यह है कि पुलिस का आदमी अच्छा देखभाल करने वाला हो उतना ही जरूरी यह भी है कि वह अपराधियों, दुमनों से अपनी मौजूदगी छुपाने में माहिर हों, क्याकि वे पुलिस की जान लेने को प्रयत्नील रहते है, ताकि पकड़ में आने से बचे रहे। छुपाव का हुनर कुदरती आड़ यानि जमीन की बनावट और बनावटी आड़ या छद्म के सही प्रयोग पर निर्भर है। छुपाव में कामयाबी हासिल करने के लिए जरूरी बातें जो पहले ही बतायी जा चुकी है।
3. आवयकता– छुपाव और छद्म की आवश्यकता के निम्नलिखित कारण है।
   (क) अपनी सुरक्षा तथा अपनी या दुमन के नजदीक पहुँचकर उसको पकड़नें और बरबाद करने के लिए उसकी नजरों से छुपाव हासिल किया जाना आवयक है, जिससे जमीन का सही प्रयोग हो सके।
   (ख) कभी–कभी जमीन ऐसी मिलती है कि बिना बनावटी साधनों का प्रयोग किये अपराधी या दुमन के पास पहुँचना कठिन हो जाता है। इन अवसरों पर छद्म की आवश्यकता पड़ती है।
   (ग) ऐसी जमीन पर पोजीान लेनी पड़ती है जिनमें जमीनी और हवाई आब्जर्वरों से बचाव न हो सके। ऐसी परिस्थितियों में बनावटी साधनो का प्रयोग करके छद्म की सहायता से छुपाव हासिल किया जा सकता है।
4. छुपाव– छुपाव के लिए ध्यान में रखने वाली बातें–
   (क) हरकत न की जाये, यदि बहुत आवयक हो तो आहिस्ता से की जाये। यह तेज हरकत के मुकाबले में कम नजर आयेंगी यदि पोजीान छोड़नी हो तो धीरे–धीरे हटकर गायब हो जाना चाहिए। यदि जवान खड़ा हो तो उसे बिल्कुल हरकत नहीं करनी चाहिए। छोटे गड्ढ़ो को पार करने के लिए तेज हरकत करनी चाहिए।
   (ख) पहनने में चमकीली सतह वाली चीजों का प्रयोग न किया जायें यादि

किया जायें तो उसकी चमक मिटा दी जाये।

(ग) यदि संम्भव हो तो आड़ के इर्द-गिर्द से देखा जाये, ऊपर से नही।

(घ) यदि आड़ के ऊपर से देखना पड़े तो इस बात का ध्यान रखा जाय कि आड़ या उसकी पृष्ठभूमि की रेखाएं न टूटने पायें।

(ड.) आकाा के विरुद्ध दिखाई न दिया जाये।

(च) छाया से अच्छा छुपाव हासिल किया जा सकता है, परन्तु यह ध्यान रखा जाय कि यह रोनी व धूप के साथ बदलती रहती है।

(छ) अकेली या प्रसिद्ध आड़ बहुत भयानक होती है, क्यों कि इनकी तरफ अपराधी या शत्रु की नजर शीघ्र जाती है और ऐसी पोजीान को आसानी से पहचाना जा सकता है।

(ज) टूटी-फूटी गहरे रंग की और समतल जमीन जो छुपाव करने वाले के कपड़ों से मेल खाती हो, छुपाव में बहुत मदद देती है।

(झ) यदि खिड़की या दरवाजें के पीछे पोजीान ली जाये तो ध्यान रहे कि पीछे ऐसी कोई रोनी न हो जिससे उसकी उपस्थिति स्पष्ट हो और दरवाजें और खिड़की से काफी पीछे हटकर पोजिान ली जाये। रेस्ट के लिए किसी बिस्तरे आदि का प्रयोग किया जा सकता है।

शब्द जमीन केवल अकेली जमीन की बनावट ही नही बल्कि उस पर मिलने वाली कुदरती व बनावटी आड़ सम्मिलित है। जमीन की हर टूट-फूट , मोड, बॉध, गढ्ढा, इमारत वगैरह छुपाव की दृष्टि से महत्वपूर्ण होती है इनसे जवानों को अपने शत्रु की नजरों व गोलियों से छुपाव करने और अपने शस्त्र का उत्तम प्रयोग करने का पूरा लाभ उठाना चाहिए। फायर का उत्तम प्रभाव तभी होता है जबकि वह बिना दिखाई दिये अचानक किया जाय। मनुष्यों की तुलना में जानवर ज्यादा अच्छे तरीके से जमीन का प्रयोग करके छुपाव प्राप्त करने के आदी होते है, परन्तु लगातार अभ्यास करने से हर जवान भी उसमें कामयाबी हासिल कर सकता है।

5. छद्म- छुपाव हासिल करने के लिए बनावटी साधनो के प्रयोग को छद्म कहते है, उसमें वस्तु की रूपरेखा को तोड़कर उसकी शक्ल बदल दी जाती है। यदि कुदरती आड़ न हो तो छद्म का प्रयोग आवयक हो जाता है। यह बनावटी साधन आसपास से मिलती जुलती घास पत्ती या रंग से प्राप्त किया

जा सकता है। छद्म केवल व्यक्तिगत ही नहीं, बल्कि हथियार आदि का किया जाना आवयक है।

(क) व्यक्तिगत कैमोफ्लाज– प्रत्येक जवान को कैमोफ्लाइज करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

(i) कपड़े एवं साज सज्जा का रंग आस–पास की वस्तुओं तथा बैक ग्राउन्ड से मेंल खाता हो।

(ii) स्टील हेल्मेट तथा अन्य एक्यूपमेन्ट की रूप रेखा बिगाड़ दी जाय, ताकि सतह से पहचानी न जा सके। मनुष्य के हाथ पॉव तथा चेहरा ज्यादा चमकते हैं, उनको वर्दी के रंग में रंग दिया जाये।

(iii) चमकती हुई चीजों की चमक खत्म कर दी जाये।

(iv) यदि छाये में छुपें हो तो धूप की चाल का ध्यान रखा जायें।

(v) कैम्पोफ्लाज किये जाने पर हरकत बहुत सम्भल के और बहुत धीरे–धीरे की जायें।

(vi) सिगरेट, बीड़ी पीने से धुआ दिन में काफी दूर तक नजर आता है, और रात में सिगरेट इत्यादि न पी जायें।

(vii)स्काई लाइन से बचा जाये।

(viii) आवयकता से अधिक कैमोफ्लाज न किया जाये।

(ix) पोजीान बदलनें पर नये स्थान के अनुकूल नया कैमोफ्लाज किया जाय। स्थानीय घास पत्तियों के मुरझाकर पहिचाने जाने से पहले उन्हे बदलते रहना चाहिए।

(ख) हथियारों का कैमोफ्लाज– कैमोफ्लाज करते समय हथियार को भी अपने शरीर का हिस्सा समझकर कैमोफ्लाज करना चाहिए। ब्रेनगन की चमकीली बैरल को विोषकर कैमोफ्लाज करना आवयक है। कैमोफ्लाज करते समय हथियारों की साइटो को बचा कर रखना चाहिए।

(ग) वैपन पिट का कैमोफ्लाज–

गन की पोजीान भी कैमोफ्लाइज की जानी चाहिए। उसके सामने घास पत्ती आदि लगा लेनी चाहिए जिससे शोला दिखाई न दे। धुँआ और धुल उठते दिखाई न दे, इसके लिए मिट्टी पर पानी छिड़क देना चाहिए या

दरी या कोई कपड़ा बिछा देना चाहिए।

(घ) पोजीान का कैमोफ्लाज–

(i) पोजीान किसी भी प्रसिद्ध निाान के पास न चुनी जाये।

(ii) पोजीान नजर से पूरी तरह छुपी हुई हो।

(iii) पोजीान छोड़ते समय पहचानने योग्य कोई वस्तु न छोड़ी जाये।

(iv) ताजा पोजीान बनाने में नई मिट्टी को कैमोफ्लाज करके ढक दिया जायें।

वैपन पिट की ड्रेसिंग– वेपन पिट की ड्रेसिंग कमानुसार न हो। न उसको लिपा पोता जाय। ऊँची–नीची, तितर–बितर और असमतल जमीन में बने हो।

जो सामान मोर्चा बनाने में प्रयोग किया गया हो उसे मोर्चे या पोजीान के पास से नहीं लेना चाहिए।

6. निष्कर्ष– उपरोक्त बातों का ख्याल रखते हुए गाड़ियों व कैम्पों का भी कैमोफ्लाज किया जायें। कैमोफ्लाज व छुपाव का असली उद्देय केवल डकैतो और शत्रु की नजर में छुपा रहना ही नहीं बल्कि देखभाल व फायर से बचते हुए धोखा देकर करीब पहुँचकर उसकों पकड़ना या बरबाद करना है।

अकेली आड़ का प्रयोग खतरनाक

खिड़की का प्रयोग (गलत – सही)

स्काई लाइन से बचाव (गलत – सही)

आड़ की बगल से देखना (गलत – सही)

❑❑❑

जमीनी निाानों एवं टारगेटों का बयान एवं पहचान

1. उद्देय– आपरेान के जबानी हुक्मो के लिए जिन जमीनी निाानों की आवयकता होती है। उनको बयान करने तथा टारगेटों का बयान और पहिचान करने की सिखलाई देना है।

परिभाषाऐं– चन्द शब्दो की परिभाषायें, जो जबानी हुक्मों में दिये जाते हैं, निम्नलिखित है–

(क) मदद के निाान (Reference Point)– पहले से नियुक्त किये हुयें वह निाान जिनकी मदद से किसी दूसरे निाान का बयान किया जाता है।

(ख) टारगेट– वह निाान जहॉ पर किसी शस्त्र से फायर किया जाता है, या जो फायर कराने के लिए नियुक्त किया जाता है।

(ग) जमीनी निाान (Land Marks)– वह जमीनीं निाान जो किसी फौजी क्रिया (Operation) के निमित्त जबानी हुक्म देने के लिए इस्तेमाल किया जाये, जमीनीं निाानों को यदि आवयक हो तो दूसरे जमीनी निाानों को बयान करने के लिए मदद के निाान के तौर पर भी प्रयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए "गोल दरख्त" बतलाया जा चुका जमीनी निाान है, और उसकी मदद से "लम्बी झाड़ी" का बयान करना है तो कहा जायेगा कि "गोल दरख्त दाहिने लम्बी झाड़ी" इस दाा में गोल दरख्त को लम्बी झाड़ी का बयान करने के लिए मदद निाान के तौर पर प्रयोग किया जाता है। कभी–कभी जमीनी निाान टारगेट भी हो सकता है।

जमीनी निाान बयान करने के सिद्धान्त–जहॉ तक सम्भव हो सके निाानों को बयान करने के लिए स्वयं आसान और तेज तरीका प्रयोग करना चाहिए उदाहरणार्थ यदि आप के सामने एक ही मन्दिर हो तो "सामने मंदिर" इतने ही बयान से इस निाान को भली प्रकार समझाया जा सकता है। जब निाान को बयान करना कठिन हो तो अन्य वस्तुओं से सहायता लेनी चाहिए। मदद के

साधन निम्नलिखित है–

(क) सिम्त और फासला (Direction and Range)

(ख) मदद के लिए निाान (Reference Point)

(ग) घड़ी (Clock)

(घ) अंगुल और बालित

(ड.) डिग्री का इस्तेमाल

बयान करने का तरीका

1.आमरुख– सबसे पहले आमरुख (General Line of Direction) देना चाहिए आपको शस्त्र ज्ञान के पाठों में भी आमरुख के बारे में पहले ही बतलाया जा चुका है, यह निाान काफी दूर होना चाहिए उस समय नाम देने की कोई आवयकता नहीं बतलाई गयी थी। इसके अतरिक्त इसके बाद से इस्तेमाल करने की दीगर कोई जरूरत नही थी, परन्तु मौखिक आदेाो के अन्दर काफी निाान भी काफी दूर हो सकते है। यदि आमरुख के निाान की आवयकता पड़े तो उसे भी जमीनी निाान के तौर पर प्रयोग किया जा सकता है। इस दाा में और निाानों की तरह इसका भी नाम देना चाहिए। यदि आम रुख वाले निाान किसी दुसरे निाान के बयान करने के लिए मदद के तौर पर प्रयोग करना हो तो भी नाम देना जरूरी है, यदि आप को जबानी हुक्मों में आम रुख केवल सिस्त जाहिर करने के लिए प्रयोग करना हो और बाद में जमीनी निाान या मदद के तौर पर प्रयोग करने की आवयकता न हो तो नाम देने की कोई जरूरत नहीं है। सिम्तो का प्रयोग करना– आमरुख से सिम्त कायम की जाती है उदाहरण के तौर पर "एक चौथाई बायें छोटी टेकरी" अर्थात् आमरुख एक चौथाई बांयें। सिम्त के बयान के लिए आमतौर पर निम्नलिखित मानक प्रयोग किये जाते हैं।

(क) थोड़ा दायें या बायें– प्रायः 11 1/2 डिग्री तक

(ख) एक चौथाई दायें या बायें– प्रातः 22 1/2 डिग्री तक

(ग) आधा दायें या बायें– प्रातः 45 डिग्री तक

(घ) तीन चौथाई बांये या दायें– प्रातः 67 1/2 डिग्री तक

(ड.) पूरा दायें या बांये– प्रातः 90 डिग्री तक

2.आसान निाानों का बयान– आसान निाानों का शीघ्र से शीघ्र थोड़े शब्दों में

हो। उसके बाद जो निाान को बतलाना हो उसे देखों कि वह अंक घड़ी के किस अंक की सीधाई में आता है। खज्जी मदद का निाान बायें 08 बजें, गोल झाड़ी दुमन का पोस्ट, घडी का इस्तेमाल करते समय 12 और 06 बजे के लिए सिम्त का प्रयोग करते है। गोल घड़ी का इस्तेमाल करते समय जहॉ तक सम्भव

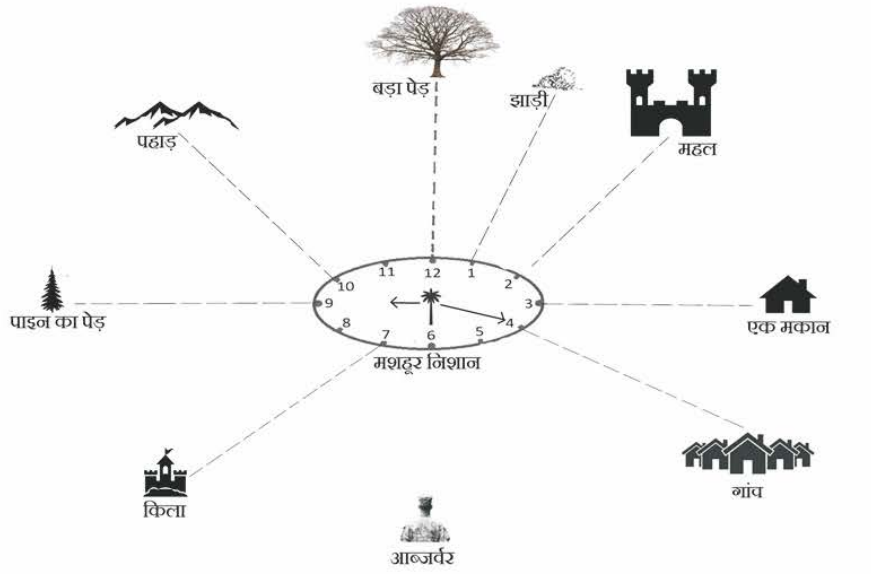

घड़ी द्वारा मदद के निशानों की पहचान

5.डिग्री का प्रयोग– यह तरीका उस समय प्रयोग में लाया जाता है जब कि निाान पहचानने में अधिक कठिनाई हो। यदि घड़ी के बजे की लाइन में एक ही प्रकार के अधिक निाान हो तो निाान को साफ प्रकट करने के लिए घड़ी के साथ–साथ डिग्री का प्रयोग किया जा सकता है।

उदाहरण–"खज्जी बॉयें 08 डिग्री झाड़ी"।

डिग्री का नापना–

(क) दूरबीन से– यह दूरबीन के अन्दर शीा से होते है जो कि किसी निाान के देखने समय देख सकते हैं।

(ख) हाथ से– यह तरीका अन्दाजे के तौर पर परन्तु काफी ठीक होता है फिर

दिये हुए तरीकों के अनुसार बयान कर सकते है। उदाहरण 'सामने टेली' बयान दो।

सिम्त की सहायता से– जब कि निशान काफी मशहूर और अपने किस्म का एक ही हो और सादा बयान द्वारा पहिचानने में कठिनाई हो तो सिम्त की मदद ली जाती है। उदाहणार्थ–आधा बांये 'बगीचा' कुछ परिस्थितियों में सिम्त की सहायता से एक निशान को दूसरे निशान की मदद लेकर भी बयान किया जा सकता है। उदाहरण– 'आधा बांये गोल दरख्त बांयें छोटी झाड़ी'।

3. सिम्त और रेंज का प्रयोग करना–

(क) कभी–कभी सिस्त के साथ–साथ रेंज का भी इस्तेमाल किया जाता है। उहारण– "आधा बांये 600 गज मकान"।

(ख) **मुश्किल निशानों का बयान–** मुश्किल निशानों का बयान करने के लिए निम्नलिखित मदद की वस्तुओं का प्रयोग किया गया है–

मदद के निशानों का प्रयोग– शस्त्र–ज्ञान में सिखाया जा चुका है कि मदद के निशान, दी हुई हदों में पहले ही से नियुक्त कर दिये जाते हैं। किसी मुश्किल निशान को बयान करने के लिए पहले बयान करने का नाम दिया है। "गोल दरख्त" यदि इसके दाहिने पर कोई निशान हो तो इसकी मदद से बयान कर सकते है।

उदाहरण– '8 गोल दरख्त, दाहिनें झाड़ी' यदि कोई निशान जो कि मदद के निशान के तौर पर प्रयोग किया जा रहा है और वह 1 डिग्री ज्यादा फैलाव का हो तो उसके मध्य या किसी किनारे आदि का खास नाम लेकर दूसरे निशान को बयान किया जा सकता है।

4.घड़ी का प्रयोग– यदि मदद के निशान के बांये या दाहिने एक ही प्रकार के अधिक निशान भिन्न–भिन्न सिम्तो में हों तो उनकों केवल बॉये दाहिने कह कर पहचानना कठिन होगा जैसे यदि पुल के दाहिने तीन या चार मकान हो तो यह मालूम करना मुश्किल होगा कि कौन सा मकान है ऐसी सूरत में बयान को साफ करने हेतु एक और मदद का प्रयोग किया जाता है। जो घड़ी का तरीका कहलाता है। इसको प्रयोग करने के लिए सबसे पहले एक फर्जी घड़ी के मध्य को उस निशान पर रखों जिसे मदद के निशान के तौर पर प्रयोग कर रहें हो। घड़ी का 12 अंक सीधा सामने को 6 अंक अपनी तरफ, 03 दाहिनें और 09 बांये पर

भी प्रत्येक आदमी को अपने हाथ से निम्नलिखित ढंग के अनुसार नाप पर विवास कर लेना चाहिए। डिग्री बांये से नापनी चाहिए, क्योकि एक तो जवान के पास दाहिनें हाथ में कोई न कोई हथियार होता है इसलिए उसको बांये हाथ से नापना आसान होगा। दूसरे यह देखा गया है कि मनुष्यों के बायें हाथ का नाप लगभग बराबर होता है। नापते समय याद रखना चाहिए कि बाजू को पूरा तानकर रखा जाय वर्ना डिग्री पढ़नें में अन्तर पड़ जायेगा।

(ग) रायफल, एल0एम0जी0 के फोर साइट और फोर साइट प्रोटेक्टर से– रायफल/एल0एम0जी0 से डिग्री का नाप नीचे चित्र में प्रकट किया गया है इस तरीके से मदद लेते समय रायफल/एल0एम0जी0 एमिंग पोजिान में होनी चाहिए।

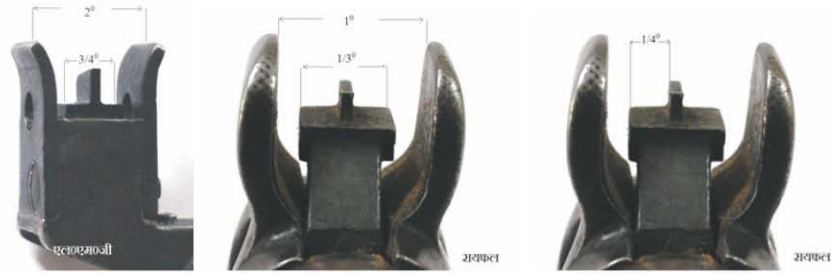

(घ) अंगुल और बालित का प्रयोग करना– यह भी एक अन्दाजा करने का तरीका है और इसमें भी बांये हाथ का प्रयोग किया जाता है। एक आँख को बन्द करके दायें व बांये का ख्याल रखते हुए अंगुली को मदद के निाान से मिलावों। उदाहरण 77 "दोहिने एक बजे 02 अंगुल छोटी झाड़ी"। इसी प्रकार से पूरे हाथ का भी प्रयोग किया जा सकता है जिसको बालित कहेंगे।

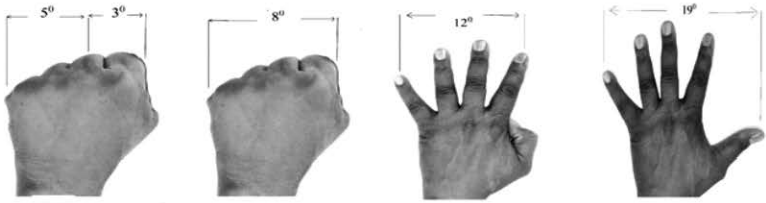

डिग्री का तरीका

अंगुल व बालिस्त द्वारा

उदाहरण–"दरख्त, दाहिने, दो बजे, एक बालित, झोपडी"। एक बालित से ज्यादा फर्क नही नापना चाहिए। यह तरीका घड़ी के साथ या अकेले दोनों प्रकार से प्रयोग किया जा सकता है।

6. डबल इन्डीकेान (Double Indication)– जब कोई निाान पहले निाान से एक बालित से ज्यादा दूर हो जिसकों बयान करना या पहिचानना कठिन हो तो यह प्रयोग किया जाता है उदाहरण 77 "दरख्त, बांये, 8 बजे, एक बालित, अकेला मकान, बांये 08 बजे 03 अंगुल, काला चट्टान।"
7. बतायें हुए निाान की पुष्टि (Cheek Back)– बतलाने वाला यह यकीन करने के लिए यह कार्यवाही करता है कि समझनें वाले अमुक निाान को समझ गये हैं या नहीं। यकीन करने के लिए बताये हुए निाान का नाम लेकर "चेक बैंक" बोला जाता है। उदाहरण– चेक बैंक "दरख्त" चेक बैंक करने के लिए बताये हुए निाान को मदद के निाान के तौर पर प्रयोग करके किसी दूसरे निाान का प्रयोग करता है जैसे "दरख्त" दोहिनें, 02 बजे, 02 अंगुल झाड़ी।
8. नहीं देखा (Not Seen)– जिस समय बयान हुआ नि ान वालों में से किसी की समझ में आये तो वह "नही देखा" कहें। इस दाा में बताने वाला फिर दूसरी मदद का प्रयोग करते हुए उस निाान का बयान करें और यकीन करें कि निाान समझ में आ गया है अथवा नहीं।
9. चयन करने की विधि– शस्त्र प्रशिक्षण (Weapon Training) में सिखलाया जा चुका है कि दी हुई हदों में मदद के निाान या जमीनी निाान या जमीनी निाान बांये से दाहिने को बयान किये जाते हैं क्योंकि इस दाा में तमाम निाान आपके सामने के इलाके में दी हुई हदों के अन्दर होते हैं। परन्तु आपरेान के जबानी हुक्म (Verbal Order) देने के लिए आवयक जमीन के निाान आपके सामने "बांये" और "पीछे" भी हो सकते है। इसलिए निम्नांकित तरीका प्रयोग में लाया जाये।

   (क) पहले आम रूख (General Line of Direction) में बतलाया जाये।

   (ख) घड़ी के सीधे रूख जमीनी निाानों (Land Marks) का बयान किया जाये। बयान करते समय कोई भी निाान जो कि दूसरे निाानों का

बयान करने में मदद दे, पहले बयान किया जा सकता है।

(ग) आम रुख या कोई निाान जब कि किसी ऊँची जमीन पर हो तो साथ ही बयान कर देना चाहिए। बाद में ऊपर भाग "ब" में दियें हुए निाानों को क्रमानुसार बयान करना चाहिए।

निष्कर्ष (Conclusion)– इस बात को हमाा याद रखना चाहिए कि निाान जहॉ तक हो सके आसान तरीके से बयान किया जाय, तो निाान कुछ मुकिल हो उनकी उचित सहायता लेकर बयान किया जाय। थोड़े अभ्यास से यह काम आसानी से किया जा सकता है।

❑❑❑

6. अभ्यास– (भाग–1) दो जवान, एक रायफल के साथ एक एल0एम0जी0 के साथ। दोनो का इलाका बताया जाय और तारगेट बताकर कहा जाय कि उस जगह से फायर किया जा रहा है। इस इलाके में उस जगह (तारगेट) पर फायर गिराने के लिए अच्छी फायर पोजीान चुनों जब वे जवान पोजीान ले लें तो शेष जवानों से उस पोजीान पर टिप्पणी करायी जाये। उन बातों के अतिरिक्त जवानों से यह भी पूछा जाये कि–

(क) क्या इससे अच्छी आड़ नहीं चुनी जा सकती थी ?

(ख) क्या इस पोजीान से शत्रु पर अचानक फायर डाला जा सकता है ?

(ग) क्या यह पोजीान किसी साफ दृष्टिगोचर होने वाले प्रसिद्ध निाान के निकट तो नहीं हैं ?

7. (भाग–2)–

(क) अब पोजीान में जो गलती हो उस जवान को बतायी जाय। कोई दूसरा जवान जो उससे अच्छी फायर पोजीान चुन सकने को तैयार हो उसे नई पोजीान चुनने का आदेा दिया जाये। बाकी जवानों कों एल0एम0जी0 के पास ले जाया जाये, और उस पोजीान पर भी इसी तरह टिप्पणी की जाये। यदि सब जवान उस पोजीान को अच्छी बतालायें तो उनको 50 गज दूर भेज दिया जाय। जवान लेटने की पोजीान से देखें कि यह पोजीान शत्रु की दृष्टि से छुपी हुई है या नही ? फिर वापस बुलाकर बहस की जाये। इसी तरह जवानों को अभ्यास कराया जाये।

(ख) थोडी–थोड़ी देर के बाद इलाका और तारगेट बदलते रहना चाहिए। अभ्यास के लिए आरम्भ में जवानों को अधिक समय दिया जाय और बाद में धीरे–धीर इसे कम कर दिया जाए।

8. भाग 3–

(क) जवानों को इकट्ठा करके उनकी बड़ी गलतियों को बताया जायें।

फायर पोजिान का चुनना

(Selection of Fire Positions)

1. प्रन–

(क) व्यक्तिगत कैमोफ्लेज करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

(ख) छुपाव और छद्म में क्या फर्क है ?

2. उद्देय– भिन्य-भिन्य हथियारों के साथ अकेले-अकेले जवान को फायर पोजीान चुनने में अभ्यास देना।

3. बन्दोबस्त–

(क) हथियार और इक्विपमेन्ट का छद्म जरूरत के मुताबिक हो।

(ख) जमीन ऐसी हो जिस पर हर प्रकार की आड़ मिल सके।

4. पहुँच–जवान को लड़ाई में छद्म करना ही काफी नहीं है बल्कि छद्म और छुपाव के साथ शस्त्र की दृष्टि और फायर से सुरक्षित रहने के लिए अच्छी फायर पोजीान चुननी भी आवयक है। अच्छे फायर पोजीान में निम्नलिखित विोषताएं होनी चाहिए–

(क) उस पोजीान में शत्रु की दृष्टि और फायर से बचने के लिए आड़ मौजूद हो।

(ख) यह आड़ इतनी खुली हो कि हथियार से आसानी से काम किया जा सके।

(ग) जहाँ फायर डालना हो वह इलाका या तारगेट साफ दिखाई देता हो।

(घ) उस जगह तक पहुँचने का रास्ता आड़ में से होकर जाता हो।

(ड.) वहाँ से एडवांस और रिटायर करना भी आसान हो। इसलिए आप जब भी फायर पोजीान चुने तो उपरोक्त बातों को ध्यान में रखें।

5. नमूना– पोजीान चुनने का नमूना दिखाओ।

रायफल और ब्रेन के साथ एक सही तथा एक गलत।

इसके पचात् जवानों को जोड़ी–जोड़ी में अभ्यास करने का आदेा दिया जायें। एक जवान पोजीान चुने और दूसरा उस पर टिप्पणी करे। फिर आपस में बदली करते जाए।

(ख) जवानों को बतलाओं कि अच्छी फायर पोजीान का चुनाव जमीन की सतह के पास यानी लेटकर हो सकता है, परन्तु उस पोजीान से देखभाल का इलाका साफ दिखाई देना चाहियें।

9. समाप्ति– सवाल–जवाब। कमजोर जवानों को अधिक अभ्यास दिया जाये।

❑❑❑

रात्रि में देखभाल

1. उद्देय–

(क) जवानों को रात की सिखलाई की अहमियत समझाना है

(ख) दिन और रात के दिखाव में अन्तर और यह बताना कि रात के वक्त चीजों को कैसे देखना चाहिए।

2. जरूरत– मौजूदा जमाने के हथियारों की तरक्की और पिछली लड़ाई के तजुर्बो से साबित हो गया है कि जो फौज लड़ाई में सरप्राइज और धोखे का ज्यादा इस्तेमाल करेगी, विजय उसी की होगी। यह सरप्राइज और धोखा दिन के बजाय रात को ज्यादा मिलता है क्योंकि रात के अँधेरे में नीचे लिखे हुए लाभ हैं–

(क) दुमन के स्ति लिये (Aimed) फायर से बचाव।

(ख) बगैर दिखाई दिये शत्रु के नजदीक पहुँच कर सरप्राइज हासिल करना।

(ग) शत्रु की हवाई देखभाल से बचाव।

3. रात के फौजी काम– इन तीनों फायदो को देखते हुए हमें रात को तरकीबन सब फौजी काम करने पड़ते हैं जिनमें से चन्द एक काम यह है–

(क) रात का हमला।

(ख) रात के हमले से बचाव

(ग) रात के समय पैदल या गाडियों में हरकत करना।

(घ) रात के समय पैट्रोलिंग करना।

(ड.) रात के समय सन्तरी ड्यूटी देना।

(च) डिफैंस की कार्यवाहियाँ तकरीबन रात को ही की जाती है।

सन्तरी ड्यूटी का काम सब जवानों को करना पड़ता है, चाहे वह किसी सास्त्र सर्विस का क्यों न हो और चाहे वह आगे फ्रन्ट पर या पीछे हेड क्वार्टर में कहीं भी हो। दुमन भी हमारी तरह रात के अंधेरे का फायदा उठाना चाहता है।

4. दिन और रात के दिखाव में फर्क–कई जवानों का ख्याल होगा कि अंधेरी रात में रोनी के बगैर कोई चीज नहीं देख सकते। यह ख्याल गलत है, लेकिन यह हो सकता है कि एक अनट्रेंड जवान दूसरे ट्रेंड जवान के मुकाबिले में कम

देखेगा। आम जवान थोड़े से अभ्यास से बहुत सी चीजें देख सकता है।

5. **आँख की बनावट–** आँख की बनावट इस किस्म की है उसे जैसी चीजे दिन को नजर आती हैं वैसी रात को नजर नहीं आती। इसकी वजह यह है कि देखने की नर्सें अलग-अलग किस्म की हैं। जो नर्सें दिन के वक्त काम करती है उन्हें कोन सेल (Cone Cell) कहते हैं, जो रेटिना के बाहर चारों तरफ फैली हुई होती हैं यही वजह है कि दिन और रात के दिखाव में फर्क है।

6. **फर्क–**

(क) किसी निाान को डिटेल में नहीं देख सकते इसलिए फासले का अनुमान लगाना मुकिल है।

(ख) रात के समय रंग नही पहचान सकते चीजें केवल उसी हालत में दिखाई देगीं जबकि उनका बैकग्राउन्ड मुख्तलिफ हो।

(ग) रात के समय किसी निाान को सीधा नहीं देखा जा सकता क्योंकि रात की दिखाई की नर्सें किनारों पर है।

(घ) रोनी से अंधेरा अपनाने के लिए 30 मिनट का समय लगता है, जो कि दिन को जरूरी नहीं।

(ड.) तेज रोनी पड़ने से आँखें धुधला जाती हैं।

7. **देखभाल का तरीका–** जब आँख अंधेरे को भी अपना जाती हैं तो मुकिल टारगेटों को भी आसानी से देखने लगती हैं इसके लिए चन्द एक सिद्धान्त काम में लाये जाने चाहिए वह इस प्रकार है–

(क) हटकर देखो– किसी निाान को सीधी नजर में कभी मत देखों। सबक यह है कि रात को दिखलाई की नों सेण्टर की बजाय किनारो पर हैं इसलिए निाान से 10 डिग्री हटकर यानी दोयें बांये ऊपर नीचे देखो इसे (Off centre vision) कहते हैं।

(ख) लगातार घूर– घूर कर मत देखों वर्ना वह निाान दिखलाई देना बन्द हो जावेगा या चलता फिरता नजर आवेगा, क्योकि आँखें जल्दी थक जाती है।

(ग) चमकीली रोनी से बचो– आंखो को चमकीली और तेज रोनी से बचाओं जैसे पैराूट फलेयर लैड-लैप इत्यादि। अगर रोनी आँख में पड़ जायेगी तो फिर आँख को अंधेरा अपनाने के लिए मेहनत करनी

पड़ेगी। अगर किसी वजह से चमकीली रोानी देखनी पडे तो एक ऑख बन्द करों या चन्द सेकेण्ड के लिए ही सिर्फ देखों।

(घ) तेजी से तलाशी मत करों– चूंकि दिन के समय ऑखें किसी निशान को सीधा ही फोकस करती है लेकिन रात के समय निशानों को कई एंगिलों से देखना पड़ता है। इसलिए किसी शकिया निशान को उसके दायें बायें, ऊपर नीचे, एंगिलों से धीरे–धीरे देखों।

(ड.) हर दो मिनट के बाद आराम दो– आंख रात के समय जल्दी थक जाती है जिसको कि आब्जर्वर महसूस नहीं कर सकता इसलिए हमेशा दो मिनट देखभाल करने के लिए 10 सेकेण्ड के लिए ऑखों को आराम दों।

(च) देखभाल नीची जगह से करो– देखभाल नीची जगह से की जाय ताकि निशान (Sky line) पर आ जाये और कानों का प्रयोग किया जाये।

8. संक्षेप– ऑखों की बनावट के बारे में जानकारी हो जाने तथा रात्रि में देखभाल की सही विधि का प्रयोग करने से अंधेरे में भी अन्ट्रेन्ड व्यक्ति की अपेक्षा ट्रेन्ड जवान बेहतर देख सकता है।

❑❑❑

फायर कन्ट्रोल आर्डर और फायर डिसिप्लिन

1. उद्देय– फायर कन्ट्रोल आर्डर देने के तरीके और फायर डिसिप्लिन के बारे में जानकारी प्राप्त करना हो।
2. परिचय– फायर की ताकत का सही इस्तेमान करने के लिए फायर कन्ट्रोल आर्डर का इस्तेमाल जरूरी हैं। यद्यपि फायर कन्ट्रोल आर्डर देना फायर यूनिट कमाण्डर की जिम्मेदोरी है लेकिन इन आडर्स की सिखलाई तमाम जवानों को भी देनी चाहिए ताकि–
   (क) फायर यूनिट कमाण्डर की मृत्यु होने पर कोई भी जवान उसकी जगह काम कर सके।
   (ख) अगर ग्रुप कमाण्डर की कमी हो तो जवानों को भी यह ड्यूटी करनी पड़ेगी। फायर कन्ट्रोल आडर्स का फायदा उठाने के लिये टारगेटों का सही बयान और उनके पहचानने की सिखलाई निहायत ऊँचे दर्जे की होनी चाहिए।
3. कुछ परिभाषायें– इसके पहले कि फायर कन्ट्रोल आडर्स के बारे में बताया जाय कुछ परिभाषाओं को जो नीचे लिखी जाती है, का समझ लेना जरूरी है–
   (क) फायर यूनिट– उस हथियार बन्द टोली को कहते हैं जो एक कमाण्डर के हुक्म से फायर करती है। आम तौर पर एक सैक्शन होती है।
   (ख) फायर यूनिट कमाण्डर– जो आदमी फायर करने के लिए फायर यूनिट को हुक्म देता है उसे फायर यूनिट कमाण्डर कहते है।
   (ग) फायर डायरेक्शन आर्डर– यह वह हुक्म होते है जो फायर यूनिट कमांडर को उससे ऊपर वाले अफसर से मिलते हैं। इन हुक्मों में बताया जाता है कि किस वक्त किन किन टारगेटों पर और कितने जोर का फायर डाला जाय। सैक्शन कमाण्डर को फायर डायरेक्शन आर्डर अपने प्लाटून कमाण्डर से मिलते हैं।

(घ) फायर कन्ट्रोल आर्डर– यह वह हुक्म होते है जो एक फायर यूनिट कमाण्डर फायर डलवाने और उस पर काबू रखनें के लिए फायर यूनिट को देता है।

(ड.) आर्क आफ फायर– यह वह इलाका होता है जिसके अन्दर टारगेटों को बर्बाद करने की जिम्मेदोरी एक फायर यूनिट को दी जाती है। यह इलाका आम रूख और बायीं और दाहिनी हदों से जाहिर किया जाता है।

(च) फील्ड आफ फायर– उस इलाके को कहते हैं जिस पर किसी भी समय में कारगर तौर पर फायर डाला जा सकता है।

4. फायर कन्ट्रोल आर्डस के सिद्धान्त

(क) फायर हमेा दुमन को मार डालने के लिए खोला जाये न कि उसको डराने के लिए।

(ख) एम्यूनीान की बचत का ख्याल रखना चाहिए।

5. फायर खोलने से पहले ध्यान में रखने की बातें–

फायर कन्ट्रोल आर्डर देने से पहले फायर यूनिट कमाण्डर को नीचे लिखी बातों पर सोच विचार कर लाना चाहिए–

(क) क्या रेन्ज और दिखाव फायर डालने के लिए ठीक है।

(ख) क्या सरप्राइज हासिल करने के लिए और दुमन को अचानक फायर से ज्यादा नुकसान पहुंचाने के लिए फायर को थोड़ी देर बाद खोला जाय।

(ग) किस हथियार से काम लेना बेहतर है? फायर की क्या रफ्तार होनी चाहिए? आम तौर पर रैपिड फायर सिर्फ इन मौकों पर खोला जाता है–

(i) जब दुमन पर अचानक सरप्राइज हासिल करना हो।

(ii) जब ऐसा टारगेज सामने आ जाये जिस पर रैपिड फायर से ज्यादा नुकसान पहुंचाया जा सकता है।

(iii) असाल्ट में कवरिंग फायर देते वक्त।

(iv) फायर पर खुद काबू रखा जाय या यह जिम्मेदारी ग्रुप कमाण्डर को दी जाये या हर एक जवान को अपने फायर पर काबू रखने का हुक्म दिया जाये।

6. फायर कन्ट्रोल आर्डर कैसे देने चाहिए–

फायर कन्ट्रोल आर्डर देते वक्त निम्न बातें याद रखनी चाहिए–

(क) हुक्म साफ, धीरे व कम शब्दों में देना चाहिए।

(ख) आवाज इतनी हो कि आसानी से सुनाई दे।

(ग) तमाम बातें हुक्म के तौर पर हों।

(घ) आर्डर ठहर–ठहर कर देने चाहिए ताकि जवान उसे साथ–साथ अमल करते जाये। उदाहरणार्थ– जब रेंज का हुक्म मिलता है या डिग्री बताई जाती है तो जवानों को खुद वह काम करना है।

फायर कन्ट्रोल आर्डर की तरकीब और फायर पर काबू रखने के हुक्म–

हुक्म हमेाा निचित तरतीब से देना चाहिए ताकि कोई बात छूट न जाय और समझाने में आसान हो। तरतीब को याद रखने के लिए शब्द (GRIT) याद रखना चाहिए।

G. ग्रुप (Group)

R. रेन्ज (Range)

I. टारगेट का बयान (Indication of Target)

T. फायर की किस्म (Type of Fire)

फायर यूनिट कमाण्डर फायर के दौरान Stop Go on वगैरह हुक्मों द्वारा फायर पर काबू रख सकता है।

7 . फायर कन्ट्रोल आर्डर की किस्में–

यह चार प्रकार के होते हैं जिनका वर्णन नीचे दिया जा रहा है–

(क) आम (Full) फायर आर्डर– इन आर्डस में पूरा हुक्म दिया जाता है। यह आर्डर दो प्रकार टारगेटों से दिया जाता है।

(i) प्वाइंट टारगेटों पर (Concentrated) कन्सन्ट्रेटेड फुल फायर आर्डर और

(ii) एरिया टारगेट या फैले हुए टारगेट पर डिस्ट्रीब्यूटेड फुल फायर आर्डर दिये जाते है। उदारणार्थ–नम्बर 01 सेक्शन 800 गज सफेद बर्जी 9 बर्जे 8 डिग्री हरी झाड़ी दुमन का एल0एम0जी0 पोस्ट फायर।

(ख) इन्तजारी या तैयारी (Delayed) फायर आर्डर– इन आर्डरो में फायर खोलने के अलावा दूसरी बातें बता दी जाती है। लेकिन फायर खोलने के

लिए हुक्म का इन्तजार करना होता है। फायर यूनिट कमाण्डर बोलता है कि फायर मेरे हुक्म से होगा। उदाहरणार्थ–नम्बर 01 सेक्शन दुमन आम रूख से एडवांस कर रहा है फायर हुक्म से होगा।

(ग) Opportunity (मौके का) फायर आर्डर– इस किस्म के फायर आर्डर जवानों को खुद फायर खोलने की जिम्मेदारी दी जाती है। उदाहरणार्थ– नम्बर 01 सेक्शन दुमन टूटी–फूटी जमीन में छिप गया है, जिसको नजर आये फायर।

(घ) Brief (मुख्तसर) फायर आर्डर– यह फायर आर्डर उस वक्त दिया जाता है जब कि टारगेट साफ व अचानक दिखाई दे और अचानक कही फायर करने की आवकयता पड़े। जैसे कि फायर किसी टारगेट पर हो रहा हो और नजदीक दूसरी तरफ से दुमन निकल आयें स्टाप फायर साइट डाउन दाहिने एडवान्स करते हुए दुमन पर फायर।

8. फायर डिसिप्लिन– चाहे फायर कन्ट्रोल आर्डर कितने ही अच्छे क्यों न हों लेकिन फायर डिसिप्लिन के बगैर कामयाबी नही होती है। फायर डिसिप्लिन को कायम रखने के लिए नीचे लिखी बातों पर अमल करना चाहिए–

(क) बिना हुक्म के फायर मत करो। अन्यथा सरप्राइज जाता रहेगा। दुमन के पेट्रोल पर तब ही फायर खोलना चाहिए जबकिह यकीन हो जाये कि दुमन का कोई जवान जिन्दा नहीं बचेगा।

(ख) फायर पूरे दुमन को मारने के लिए करना चाहिए।

(ग) रात के समय फायर डिसिप्लिन निहायत ऊँचे दर्जे की होना चाहिए।

(घ) अन्धाधुन्ध फायर नहीं करना चाहिए। एम्यूनीान की बचत का ख्याल रखना चाहिए। रात के समय दुमन हमारी पोजीान और नफरी मालूम करने के लिए तरह–तरह की चालाकियॉ करता है। इसलिए रात के समय तभी फायर खोलना चाहिए जबकि यह यकीन हो जाय कि दुमन का कोई भी जवान बच कर नही जायेगा। फायर वॉली यानी बौछार के तौर पर करना बेहतर होगा।

कभी–कभी जवान बगैर हुक्म अपनी अक्ल से भी फायर कर सकते है। उदाहरणार्थ जब दुमन अटैक कर रहा हो और एक होशियार जवान दुमन के

आफीसर या वायरलेस आपरेटर को मार गिराये तो लड़ाई का पांा पलट सकता है।

संक्षेप– सरप्राइज, कामयाबी, और एम्युनीान की बचत हासिल करने के लिए फायर कन्ट्रोल आर्डर का दुरूस्त इस्तेमाल और फायर डिसिप्लिन निहायत जरूरी है। फायर कन्ट्रोल आर्डर में महारत न सिर्फ यूनिट कमाण्डर को होना चाहिए बल्कि तमाम जवान इसमें माहिर होने चाहिए। फायर कन्ट्रोल से फायदा उठाने के लिए टारगेटो को पहचानना और सही बयान निहायत जरूरी है।

फायर खोलने का हुक्म देने से पहले फायर यूनिट कमाण्डर को खूब सोच विचार करके यह फैसला कर लेना चाहिए कि फायर कब किस हथियार से और कितनी मात्रा में खोला जाय। फायर आर्डर ठीक तरतीब और आवाज से साफ–साफ शब्दों में ठहर कर हुक्म के तौर पर देना चाहिए। फायर खोलने के बाद फायर यूनिट कमाण्डर को चाहिए कि वह उस पर काबू रखें।

❑❑❑

शत्रु का पता लगाना

1. प्रबन्ध– यह पाठ फायर करने योग्य क्षेत्र (Field Firing Area) में लगाया जाना वॉछनीय है। ऐसा क्षेत्र न मिल सके तो जिन्दा एम्युनीान का प्रयोग नहीं किया जा सकेगा। फील्ड फायर एरिया उपलब्ध हो तो शस्त्र निम्नलिखित के अनुसार रखे जायें–

शस्त्र	फासला फायर की तरकीब
(क) राइफल, एल0एम0जी0	1000 गज 2 या 3राउन्ड फायर।
(ख) राइफल, एल0एम0जी0	600 गज 2 या 3 सिंगल शाट फायर।
(ग) राइफल, एल0एम0जी0	350 गज 2 या 3 सिंगल शाट फायर।
(घ) राइफल,	100 गज 2 या 3 राउन्ड फायर।
(च) 2" मोर्टार	550 गज 2 या 3 बम्ब फायर।
(छ) ई. वाई राइफल, एच. ई. 36 ग्रिनेड	200 गज 2 या 3 ग्रिनेड फायर।
(ज) स्टेन और पिस्टल	25 गज चन्द एक राउन्ड।

अगर फायरिंग एरिया न मिले तो नमूना देने के लिये जवानों की निम्नलिखित के अनुसार लगाओ।

(क) दूरबीन से देखभाल करना	900 गज।
(ख) नक्शा पढ़ने वाला	800 गज।
(ग) वायरलेस या टेलीफोन से बातचीत करने वाले	500 गज।
(घ) हाथ से इशारा करने वाला	400 गज।

ऊपर बताये हुए जवानों को उचित आड़ में लगाओ कुछ जवान आसानी से नजर आने चाहिये और कुछ मुकिल से।

2. प्रारम्भिक कार्यवाही– स्क्वाड व शस्त्र का निरीक्षण करो।
3. दोहराई– चीजें क्यों दिखाई देती हैं ? इस विषय पर तथा छद्म और छुपाव के विषय को प्रश्नोत्तर द्वारा दोहराओ।